International Research Journal ISSN-0975-3486 VOL. I * ISSUE—5 RNI : RAJBIL/2009/30097

शोध पत्र

Feb, 2010

प्रागैतिहासिक काल के आदिम्-मानवों का सांस्कृतिक मानवशास्त्रीय अध्ययन

आदिमानव और उसके प्रकार प्रागैतिहासिक युग का अध्ययन

*डॉ. प्रो. चन्द्रिकासिंह सोमवंशी
** प्रो. महेन्द्रकुमार धनजी सीजु

* रिसर्च स्कॉलर, आदीपुर, कच्छ
** हिन्दी विभाग, तोलानी कॉलेज ऑफ आटर्स एण्ड सांइस, आदीपूर, कच्छ

आदि–कालीन मानव के बारें में हमारे ज्ञान को प्रदर्षित करने के उद्देष्य से, और हमारे अज्ञान को छिपाने के लिए अनेक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। पुराने और नये प्रस्तर–युग के मानव के चित्रण का कार्य हम विज्ञान की अन्य कल्पनाषील शाखाओं पर छोड़ कर यहाँ यह देखने का प्रयास करे गें कि इन 'पूर्व–पाषाण–युगीन' (Paleolithic) और 'नव–पाषाण–युगीन' (Neolithic) संस्कृतियों का हमारे समसामायिक जीवन के लिए क्या योगदान रहा है। मानव का आदि–स्वरूप मालूम करने के लिए पृथ्वी की गोद की तहों में दबे हुए प्रस्तरीयकृत अस्ति पन्जरों (नर कंकाल) का कमबध्द और व्यवस्थित अध्ययन तो पुरातनषास्त्र (Human Palaeontology) के जरिये ही सुलभ किया जा सकता है। मानव पृथ्वी पर कब और कैसे अवतरित हुआ? उसकी प्रारम्भ में शारीरिक रचना कैसी थी? विकाष की किन–किन अवस्थाओं से गुजर कर वह आधुनिक मानव या मेघावी मानव के रूप में विकसित हुआ? मानव का शरीर रचना अन्य जीवों से किस प्रकार भिन्न है? और मानव के स्वयं के कौन–कौन से विभिन्न वर्ग (प्रजातियाँ) हैं? आदि बातें का हल प्राकृतिक विज्ञान और नृतत्व विज्ञान (मानवषास्त्र) के जरिये बड़े–बड़े वैज्ञानिकों ने की हैं। Anthropology और Natural Science के जरिये ही इन समस्याओं को हल किया जा सका है।

आधुनिक भुगर्भषास्त्रीय सिध्दान्तों के अनुसार प्रथम हिमयुग (Ice Age) का काल 5,00,000 (पाँच लाख) वर्ष ईसा पूर्व था, प्रथम–अन्तर–हिमपात का समय 4,75,000 वर्ष से 4,00,000 (चार लाख) वर्ष ईसा पूर्व; द्वितीय–हिमयुग–लगभग 4,00,000 (चार लाख) वर्ष ईसा पूर्व से द्वितीय–अन्तर– हिमपात् युग लगभग 3,75,000 (तीन लाख पचहत्तर हजार) से 1,75,000 (एक लाख पचहत्तर हजार) वर्ष ईसा पूर्व, एंव तृतीय हिमयुग 1,75,000 (एक लाख पचहत्तर हजार) वर्ष ईसा पूर्व; तृतीय–अन्तर–हिमपात् युग 1,50,000 (एक लाख पचास हजार) वर्ष से 50,000 (पचास हजार) वर्ष ईसा पूर्व वर्ष के मध्य में था।[१]

''मनोर्वषो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽमवत् । ब्रह्माक्षत्राद यस्तस्मान्मनों र्जातास्तु मानवाः।।'' (भारत १/७५/१२)

''मनुना प्रोक्तं मनु–अण् । २ उपपुराणविषेष। सनतकुमारं प्रथम नरसिंह ततः परम् । नारदीयं षिवञचैव दौर्वाससमनुत्तमम । कापिलं मानवञचैव तथा चौषनसं स्मृतम्।।'' (देबी भागवत् १/३/१३) मनुष्य विवर्त्तबाद की उच्च सीढ़ी पर पहुँचने पर भी किसी अदृष्यमान प्राचीन जीव का सहोदर किसी काष्यपकल्प ब्रह्मा की सन्तति का अद्यस्तन वंष है। हो सकता है कि जिस औरत से उरग और बिहड़्ग की उत्पत्ति हुई है उसी तरह मानव उनका सौतेला भाई हो।[३]

डॉ॰ स्मैर्लिंग (Dr. Schmerling)[४] का कहना है कि जहाँ गुहा भालू (Cave-baour) विचरण करते थे, ठीक वहीं पर मनुष्य भी। क्योंकि उनकी ठंठरियों (अस्ति पन्जरों यानि कंकाल) के पास ही मानव की ठठरियाँ भी पायी गयी हैं। सुप्रसिध्द फ्रान्सीसी प्रस्तरविद् बूचर (Bcucher de Perthes), रिगालोंट (Rigollot), फकनार (Faleoner), प्रेश्ठविच एवं इभनस आदि भूगर्भषास्त्रिय विद्वानों ने सन् 1850 ई॰से 1860 ई॰ के बीच बहुत गवेषणात्मक पूर्वक परिक्षण द्वारा स्थिर किया गया है। प्राचीन समय में ही भारतवर्ष की उत्पत्ति हुई हो गी। विन्ध्यपर्वत या विन्ध्यचल पर्वत एक प्राचीनतम् ज्वालामुखी पर्वत है। ''जिस दिन सजीव ज्वालामुखी पर्वत विन्ध्यचल पर्वत अग्निहीन हुआ, जिस दिन यौवन के उद्दाम अच्छश्रृखंलता 'दण्डकरूप इन्द्र द्वारा उसका बक्ष लूट लिया गया, जिस दिन निस्तेज दुबला–पतला विन्ध्यगिरि अगस्त के पद पर झुका, उस दिन का इतिहास 20,000 (बीस हजार वर्ष) वर्ष पहले का है।''[५] पृथ्वी के सबसे छोटे मानव षिषु की उम्र को गिन कर भी वे उसकी हालत को कुछ नहीं जान सके। ड़रते हुए अनुमान का आश्रय लेकर वे कहते हैं कि मानव–जाति की उम्र लाखों हजारों वर्षो से भी अधिक है।[६]

''इसके काफी समय के बाद तब जाकर जंगली जीवों की उत्पत्ति हुई, जिन्हें वनस्पतियाँ अपनी पालना में झूला–झुलाती थीं। पषु–पक्षियों और जंगली जीवों के बाद ही प्रथम मानव का पृथ्वी पर अवतरण हुआ हो गा वह भी शायद सबसे पहले बन्दरों के समरूप में।''[७] तो वे कैसे उड़ते रहे हों गे? आदिम् युगीन मानव ने, मानव का मांस खाने और जानवरों के मांस खाने के बीच कोई नैतिक अन्तर नहीं स्वीकारा। मलेसिया नामक स्थान में उस सरदार का समाज की दृष्टि से बहुत ही अच्छा मान बढ़ता था जो अपने आये हुए मित्रों को मनुष्य के भूने हुए मांस से स्वागत् करता था।[८]

इलाहाबाद. आदिम्–मानव ने जंगलों, पहाड़ों, खोह–कन्दराओं और नदियों की तलहटियों, पहाड़ों की अन्धेरी–गुफाओं में अपना बसेरा

बसाया। हम यों कहें कि मनुष्य के विकाष के साथ ही साथ इतिहास का भी सृजन आरम्भ हुआ। इस आरिम्भक इतिहास को हम प्रागैतिहासिक संस्कृति के नाम से अर्थात् प्रीहिस्टोरिक पीरियड़ एंव उसे पूर्व पाषाणयुग (Early Stone Age) या फिर पाषाणकाल (Stone Age) भी कहते हैं। मानव आज से लगभग 6 से 7 लाख वर्ष तक प्रायः असभ्य ही था।[६] पुरातत्ववेत्ताओं (Archeaologists) ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि वह समस्त क्षेत्र जहाँ पर आदिम्–मानव के असंख्य उपकरण जैसी चीज प्राप्त हो सकते थे, रिहन्द–नदी की बाँध में डूब गये और जो क्षेत्र बचा उसकी खुदायी करायी गयी और जो सामग्री निकली; उनसे भी इन्हीं तथ्यों की ही पुष्टि होती है कि आदि्–मानव जानवरों सा जीवन व्यतीत करता था और उन्हीं के साथ ही घुल–मिल गया था। अफ्रीका के पाषाणास्त्रों को 17 (सत्रह) लाख वर्ष पुराना माना है और उसके ही आधार पर भारत के पाषाणास्त्रों को आठ लाख वर्ष पुराना होने का अनुमान किया है। यह अनुमान रसायनषास्त्र की विधियों के द्वारा कार्बन बी॰ और कार्बन डी॰ चौदह के द्वारा सुलभ को सका है।[११]

गंगा, सोन ओर बेलन घाटी के मानव एक जैसे थें। वे समयानुसार स्थान परिवर्त्तन किया करते थे। गर्मियों में वे गंगा की तराई में रहा करते थे और शेष समय में वे लोग सोन की तराई में।[१२] इलाहाबाद विष्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जी॰ आर॰ शर्मा ने लिखा है कि ''गंगा घाटी में बिन्ध्य–क्षेत्र की और से ही प्रथम–मानव का आगमन हुआ था। फतेहपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर में और फिर फाफामऊ से उन्नाव रोड़ पर दूर–दूर तक गंगा के किनारे पाषाणयुगीन मानव–चिन्ह् दो सौ से भी अधिक स्थानों में विभिन्न चार–स्तरों की घाटी में दबे पड़े हैं। खुदाई में कान के कुन्डल, गले के हार; हड्डियों और सींगों के बने हुए कंगन आदि मिले हैं जिससे विदित होता है कि मानव का आदि–स्त्रोत विन्घ्यपर्वत की गुफा–मालाओं में ही था।''[१३(अ)] धोलावीरा, कुरून, देषलपर, कानमेर, सुरकोटड़ा जैसे कच्छ प्रदेष के स्थलों में सें भी कान के कुण्डल, हाथी दाँत के बने हुए हाथ के कंगन, कान में पहनने के लिए कुण्डल, गले में पहनने के लिए मोतियों की माला अर्थात् हार, हड्डियों और कौडियों, छोटे–छोटे शंखों के बने हुए अनेकों प्रकार के गहने इत्यादि मिले हैं। पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति अनुमानतः कम से कम पिछले छः लाख वर्षो से और अधिक से अधिक 10 लाख वर्षो से है। जिसके प्रारम्भ का अधिकांष काल उसने अपने आदिम–अवस्था में ही बिताया, जिसे हम प्रागैतिहासिक काल या पूर्व पाषाणकाल (Pre Historic or Early Stone Age) भी कहते हैं। जब मनुष्य पषुओं की भाँति जंगलों में, पर्वत्तों और नदी–घाटियों, तलहटियों में विचरण किया करता था तथा कन्दमूल–फल या जानवरों–पषुओं का षिकार कर उनके मांस को कच्चा खा जाता था, इस तरह षिकार कर वह अपना उदर (पेट) भरता था।

ग्रेगरी डब्लू॰ के॰ (Greggry.W.K.) ने सन् 1929 ई॰ में "Our Face from fish to Man" पर लिखा है कि चेहरे की हड्डियों के मूल को खोजते हुए, एक–एक मद को लेकर, मछली से माध्यमिक रूपों और मानव तक यह दिखाया है कि यह सदृषताएँ कितनी अधिक विस्तृत हैं। मानव और उसके घनिष्टतम् प्रधान सम्बन्धी, बड़े बन्दरों के बीच अनेक समानताओं का बिबरण मिलता है।[१३(ब)] यधपि केवल मानव ही एक सच्चा दोपाया जीव है और बन्दर चलने में अपने दोनों हाथों का मदद लेते हैं, इसलिए वे चौपया के समान चलते है; पर केवल मानव और बड़े बन्दरों के पास ही वह पिछले पैर हैं जिनका इसमें प्रयोग किया जा सकता है। सीधे खड़े होने में सफलता उन परिवर्त्तनों को लाने वाली एक बुनियादी चीज थी, जिसने मनुष्य को सीधा खड़े होने, बोलने और औजार इस्तेमाल करने तथा संस्कृति का निर्माण करने वाला जीव बनाया।[१४] श्री मोरटोन डुडले एच॰ ने लिखा है कि किस प्रकार मनुष्य का पैर उससे धनिश्ठतया सम्बन्धित दो जीवों षिम्पाजी (चिम्पाजी) और गोरिल्लों से भिन्न है।

अब हम आदिम मानवों के प्रकारो की चर्चा करेंगे जिनकी किस्में लगभग बारह 12 जितनी है, जो इस प्रकार से हैः– (1.) दानवाकार–बानर–मानव या दानवाकार मानव (Gigantopithecus Blackie या Gigantanthropus) (2.) बृहत–मानव पुराजावानी (Meganthropus palacojavanicus) (3.) बानर–मानव – बिषाल (Pithecanthropus Robustus) (4.) ऊर्ध्व–बानर–मानव (Pithecanthropus Erectus) (5.) होमो मोदजोकरटेनी – मानव (Homo Modjokertensis) (6.) पेकिनीय – चीनी – मानव (Sinanthropuspakinensis) (7.) सोलोनी–मानव (Homo Soloensis) (8.) बद्जाक – मानव (Homo Wadjakensis) (9.) अफ्रीकी – मानव – नजारस (Africanth ropus Nijarosensis) (10.) हीडलवर्गी – मानव (Homo Heidelbergensis) (11.) नीडरथल–मानव (Homo Neanderthalensis) (12.) को – मैग्नन – मानव (Cro-Magnon_Homo) मानव के प्रारिम्भक विकाष में अफ्रीका की भूमिका के महत्व पर श्री डार्टब्रूम और अन्य

विध्दानों के कार्यों ने काफी प्रकाष डाला है। यह कार्य 1924 ई॰ में शुरू हुआ था। जबकि श्री डार्टब्रूम ने आस्ट्रेलिया वानर–मानव का पुनरूध्दार किया और उसी के नाम पर उसे एक आस्ट्रेलीयन–वानर–मानव अफ्रीकी डार्ट कहा गया। दक्षिणी अफ्रीका पुरा – मानवषास्त्र के लिए पैलोने 1937 ई॰ और बाद की खोजो के लिए श्री बारबूर ने 1949 ई॰ में किये गये रिसर्च को देखिए, जो काफी विस्तार से है।[१५]

पुरा–पाषाण–युग की संस्कृति को समझने के लिए श्रीडेस्मण्ड क्लार्क ने परिस्थिति–विज्ञान अर्थात् परिस्थितीषास्त्र (Ecology) का सहारा लिया। इकोलॉजी या परिस्थितीषास्त्र में जीव–धारियों और उनके पर्यावरण के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। आदिम–मानव उस समय परिस्थितियों का दास बना हुआ था, उसे इन विकट परिस्थितियों के बीच में फंसे हुए से निकल पाना कठिन कार्य था। शारीरिक प्रुफ संस्कृति के अर्न्तगत वास्तव में वर्त्तमान नस्लों के विभेदीकरण इतना धुंधला है कि हम मेकग्रीवर के इस कथन से सहमत हो सकते हैं कि शायद कोई नीडरथल–मानव की अपेक्षा मेघावी–मानव के तत्कालिक उद्गम् के बारे में कम जानकारी है।[१६] टेकनिक विकसित की, जब कि चीनी–मानव को आग के प्रयोग का पता था।''[१७] यूरोप में जबकि उच्च–पुरा–पाषाण–काल में चित्रकला का निरन्तर विकाष हुआ।

1. रोडेशियेन समूह (Rhobsian Group) :– दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका के उत्तरी रोडेषिया के ब्रोकन हिल (Brokan Hill) स्थान से प्राप्ति इसका फर्ज निर्मित करती है। समस्त निडरथलों में मानव स्वरूप के सबसे अधिक निकट हैं। अधिकांष विध्दानों ने नीडरथल समूह से इसके सम्बन्ध को स्वीकार किया है।

2. मुस्तरियन समूह (Mousterian Group) :– यह रूप जिन्हें श्री मोरान्ट ने मुस्तरिय या बिडनराइख (Bidanraikh) ''स्पाई समूह'' कहा है जिनमें कि लालेपिया, ला–कबिना, स्पाई–नीडरथल, ज़िब्राल्टर, करपिला और ले–मुस्तियर में पाये गये मानव–खोपड़ियाँ (कपाल) प्रमुख उदाहरण हैं।

3. ऐहरिंग्सडोर्फ समूह (Ehringsdorf Group) :– जिसमें

कि श्री ऐहरिंग्सडोर्फ कपाल के अतिरिक्त ताबून, स्टीनहाईन और अन्य स्थानों में खोपड़ियाँ (कपाल) भी सम्मिलित हैं।

4. आधुनिक मानव के सबसे निकट समूह :— जिसमें कि श्री सर आर्थर कीथ और श्री टी॰डी॰ मैकडाउन जैसे विद्धानों के द्वारा खोजे गये स्खूल माउन्ट कारमेल की प्राप्तियाँ गेलिली का कपाल (खोपड़ी) सम्मिलित हैं । सन् 1920 ई॰ कें दषक के खोज के बाद इस नतीजे पर पहुँचने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है कि ''नीडरथल—मानव'' से ''मेघावी—मानव'' तक उनमें से अल्प—उन्नति रूप लुप्त हो गये; परिणाम न था। जैसे कि महोदय मैक ग्रीगर अपने ग्रन्थ[१८] में लिखा है। ''पष्चिमी यूरोप के नीडरथलों के मानव प्ररूपों में पुरा—मानवीय लक्षणों के साथ निष्चित नाप—मानवीय अर्थात् आधुनिक लक्षणों का मिश्रण निडरथल—मानव की व्याख्या दोनो प्ररूपों के सम्बन्ध उद्‌गम के बारे में पेचीदा प्रष्न पैदा करते हैं। इसे एक नयी जीव—जाति स्वीकार किया गया और सन् 1864 ई॰ में इसका नामकरण हुआ। यद्यपि इस पर बराबर बहुत सालों तक बिबाद होता रहा कि क्या यह आधुनिक—मानव का एक विकष्त उदाहरण था, या फिर यह एक प्रारिम्भक मानव का रूप था। इस पृथ्वी पर इस मानव रूप का जीवन बहुत लम्बा था। नीडरथल अवषेषों के प्रारिम्भक उदाहरणों को, जिन भूगर्भ—स्त्तरों से वह प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार 1,00,000 (एक लाख) वर्ष पुरानी तथा बाद वालों को 25,000 (पच्चीस हजार) वर्ष पुरानी तिथि दी जा सकती हैं। इस प्रकार जिस काल में नीडरथल—प्रारूप— जीवित रहे, वह काल विधि—गत हाल के नमूनों की मष्त्यु के बाद के समय की अवधि की तुलना में कहीं लम्बी थी। इसलिए यह स्पष्ट है कि नीडरथलों और उनके उत्तराधिकारियों, ''को—मैगनन'' मानवों के बीच की विभाजक रेखा अस्पष्ट ही खींचनी होगी।[१८(ब)]

ऐसा प्रतीत होता है कि यूरोप के इन प्राचीन निवासियों का स्थान लगभग 20,000 (बीस हजार) वर्ष ईसा पूर्व एक नयी मानव प्रजाति ने ले लिया, जिसे ''क्रो—मैग्नन'' मानव के नाम से जाना जाता है क्योकि इस मानव की प्रस्तरित दक्षिणी फ्रान्स के दोर्दोन क्षेत्र की ''क्रो—मैग्नन—मानव'' नामक एक गुफा से (सन् 1886 ई॰) में प्राप्त हुए थे। इन अवषेषों से पता चलता है कि 'को—मैग्नन मानव' काफी लम्बे चौड़े खूब ताकतवर हुआ करते थे। उनका कद पाँच फुट दस इन्च से लेकर छः फुट चार इन्च तक हुआ करता था, और उनकी खेपड़ी की समाई 1590 से 1715 घन—सेन्टीमीटर होती थी। ''डॉ॰ (प्रो॰) सी॰ एस॰ सोमवंषी, रिसर्च स्कॉलर, के मुताबिक 'नीडरथल मानव की भाँति 'क्रो—मैग्नन' मानवों को भी हम ''गुहा—मानव'' के रूप में ही जानते हैं क्योंकि उनके अवषेष गुफा में मिले हैं। अन्त में नीडरथल मानवों का अन्त हो गया और क्रो—मैग्नन मानव विजयी हो कर पष्चिमी यूरोप के आधुनिक निवासियों का पूर्वज बना।' नियडरथल अस्तिपन्जर और मोस्टैरियन औरिग्नेषियन पत्थर काफी मात्रा में फिलीस्तीन में भी प्राप्त हुए हैं। नेब्रास्का में भी हड्डीके कुछ उपकरण मिले हैं। जिनके बारे में वहाँ के राष्ट्रबादी अधिकारियों का दावा है कि वे ५,००,००० (पाँच लाख) वर्ष ईसा पूर्व के है। ओक्लाहामा और न्यू मैक्सीको में बाण के फल पाये गये हैं जिन्हे 3,10,000 (तीन लाख दस हजार) वर्ष ईसा पूर्व के काल का बताया जाता है। ''प्रागैतिहासिक मानव से ऐतिहासिक मानव को सभ्यता के मूलाधार प्राप्त होने में इतना लम्बा समय लगा। नीडरथल में मिले अवषेषों में हमें कोयले के टुकड़े और जली हुई हड्डियाँ भी मिली हैं, जिनका अर्थ होता है कि 40,000 (चालिस हजार) वर्ष ईसा पूर्व में मनुष्य को आग पैदा करना आता था।'' काफी कुछ ड्डुज संग्रहालय में मौजूद हैं। कानमेर, कुरून, देषलपर, धोलाबीरा, सुरकोटड़ा, ध्रांग आदि में से हाथ से फेंके जाने वाले पत्थर के औजार पाये गये हैं। सन् 1929 ई॰ में (W. C. Paiyi) (पेई) नामक एक युवक चीनी—पुरातन शास्त्री (Paleaontologist) ने पैकिंग से लगभग 37 मिल दूर चो—को—नियन के समीप एक गुफा में एक खोपड़ी प्राप्त की, जिसके बारे में श्री एबे—ब्यूईल और जी॰ इलियट, स्मिथ जैसे विषेषज्ञों ने निर्णय दिया कि वह मानव की खोपड़ी है। इस खेपड़ी के पास अग्नि के कुछ चिन्ह् और औजार की शक्ल के कुछ पत्थर भी प्राप्त हुए। परन्तु इन मान्वीय अवषेषों के साथ ही वहाँ ऐसे जानवरों की हड्डियाँ भी पड़ी मिली, जिसके बारे में विषेषज्ञों का मत है कि वे आरिम्भक प्रति—नूतन—युग (Early Paleistocene Epoch) अर्थात् 10,00,000 (दस लाख) वर्ष ईसा पूर्व के प्राणी रहे हो गें। सन् 1911 ई॰ में इग्लैण्ड के सूसेक्स प्रदेष के पिल्टडाउन नामक स्थान में श्री डाउसन और श्री उडबर्ड नामक वैज्ञानिकों ने कुछ मानव अवषेष प्राप्त किये, जिन्हें ''पिल्टडाउन मानव'' या ''उषा—मानव'' (Pitdawn Man OR Eoanthropus, OR Dawn Man) के नाम से जाना जाता हैं। इस मानव का काल 10,00,000 वर्ष (दस लाख वर्ष) से 1,25,000 वर्ष (एक लाख पच्चीस हजार वर्ष) वर्ष ईसा पूर्व आँका जाता हैं।

मानव जाति को एक ही जीव—जाति स्वीकार करने वाला मिस्टर बीडनराईख कहता है कि ''जहाँ कहीं भी आदमी रहा हो, विकाष जारी रहा और प्रत्येक कदम सामान्य विकाष और विषेषधाराओं (Strains) का केन्द्र रहा होगा ?'' इस प्रकार उसने, जैसा कि हम देख चुके है ''वानर—मानव और सोलोनी—मानव में आस्ट्रेलियायी आदिवासियों की विषिष्ट आकृति ही नहीं देखी, बल्कि उसने इस बात की ओर भी संकेत किया है कि ''फावड़े नुमा'' (Shovet shaped) कुतरने के (Incisor) दाँत जो कि 'चीनी—मानव' का लक्षण है, वह वही है जो कि वर्त्तमान मगोलाइड़ में पाये जाते हैं। बावजूद इसके वह इस सम्बन्ध में कि ''कहाँ तक जीवित नस्लों को खोजा जा सकता है।'' यह चेतावनी देता है, कि इस प्रष्न का उत्तर देते समय ''हमें इस कठिनाई का सामना करना पड़ता है कि त्वचा और बाल के लक्षण ही सबसे प्रभावकारी लक्षण होते हैं जबकि हमें पिछली नस्लों, विषेषतः निखातकों की पहचान में पूर्णतः कंकालिय भागों पर निर्भर रहना पड़ता है।'' ''षरीर के कोमल भागों की तुलना में हड्डी की संरचनाओं की व्याख्या और भी कठिन है।''[२१]

बोलर्ट के लेख ''नयी दुनिया की वर्त्तमान व अतीत जन—संख्याओं पर कुछ विचार'' में काफी जोर दिया गया। मुझे इस बात पर आष्चर्य होता है कि हम अपने मानवषास्त्रियों और जातिषास्त्रियों को अक्सर नोक्स की'' ''मानव जाति की नस्लें'' नौट और श्री ग्लीडन की ''मानव जाति के प्ररूप''' और ''स्वदेषीय नस्लें'' का हवाला देते हुए नहीं सुनते। इनमें से पहली रचनापूर्ण और मौलिक है, दूसरी प्रारिम्भक है, परन्तु ''स्वदेषीय नस्लें'' अभी तक हमने अपनी भाषा में जितनी मानवषास्त्रिय रचनाएँ देखी हैं उनमें अत्यन्त मूल्यवान देन है।[२२(अ)] श्री ग्रान्ट की ''महान् नस्ल का अवसान'' और श्री स्टोडार्ट की ''रंग का उठता ज्वार'' इस काल की सबसे पढ़ी जाने वाली रचनाएँ हैं। प्रागैतिहासिक और आद्यैतिहासिक युग पर भारत में भी बहुत बड़ा काम हुआ हैं। ''पूर्वी भारत का प्रागैतिहासिक एंव आद्यैतिहासिक अध्ययन'' पर डॉ॰ अहमद हुसैन दानी ने काम किया है। आदि में भी प्रागैतिहासिक युग की झाँकी प्रमाणिकता के साथ में मिलती है।[२२(ब)]

Quaternary या Drit युग में पत्थर के बने कुठारों का व्यवहार होता था। विषालकाय हाथों के शरीर की ठठरियों की बगल में

ही मनुष्य के प्रस्तरषास्त्र मौजूद है। इग्लैण्ड के केण्ट प्रदेष की गुहा और मध्य फ्रान्स के किसी–किसी स्थान को खोदकर भूगर्भषास्त्रियों ने देखा कि बारहसिंधों की ठठरियों के बाद मामथ जातीय हाथी की ठठरी मौजूद है। उस समय मनुष्य एस्कुइमों जाति के अनुरूप आचार–विचार करते थे। ''पूर्व–पाषाण–युग के मानवों को भी थोड़ा बहुत विज्ञान का ज्ञान था। कयोंकि उस युग की जो खोपड़ियाँ मिली हैं उनमें सूराख किये गये हैं तथा कुछ अस्ति पन्जरों मे हाथ–पाँव की ऐसी हड्डियाँ मिली हैं जो टूट जाने के बाद फिर से जोड़ी गयी थी।''[२२(स)] थोड़ी सी चर्चा हम यहाँ पर 'नव–पाषाण–युग' (Neolithic Culture) की शे करते चलते है। नव पाषाण काल के अवषेषों में मिली सबसे पुरानी हड्डियाँ कुत्ते की ही है, जो मानव जाति का सच्चा और विष्वास पात्र साथी रहे वे सबसे प्राचीन और वफादार सम्मिलित है।

''कुत्ते की यह हड्डियाँ लगभग 8,000 (आठ हजार) वर्ष ईसा पूर्व की है। इसके कुछ समय बाद लगभग 6,000 (छः हजार) वर्ष ईसा पूर्व के आस–पास बकरी, भेड़, सुअर व बैल की बारी आती है। सबसे अन्त मे धोडे का नम्बर आता है जो शायद खदान मे दब गया था। वह भी अपने हाथ में हिरण के सींग की एक कुदाली पकड़े हुए है।[२४] धातु का प्रयोग नव–पाषाण–काल के अन्त में आरम्भ हुआ हो गा। धातु युग में सबसे पहले मनुष्य ने ताँबे का प्रयोग करना सीखा। धातु विज्ञान के विषेषज्ञों का कहना है कि पथरीली कच्ची चट्टानों के बीच में आग लगायी गयी होगी ''ताँबे की खोज कम से कम 5000 (पाँच हजार) वर्ष पुरानी है। क्योंकि क्रीट देष में 3000 (तीन हजार) वर्ष ईस्वी पूर्व के अवषेषों में और मिश्र (ईजिप्त) के 2800 (अठाईसौ) वर्ष ईसा पूर्व के खण्ड़हरों में तथा द्राय के 2000 (दो हजार) वर्ष ईसा पूर्व के द्वितीय नगर में काँसे की वस्तुएँ पहली बार मिली हैं।[२५]

हमूराबी की राजधानी में (2100 वर्ष ईसा पूर्व में) लोहा एक बहुत ही कीमती धातु रहा है। लोहा भारत में, सिकन्दर के साथ साथ आया।'' मैं यानि लेखक डॉ० (प्रो०) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी, रिसर्च स्कॉलर इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ''आदिम–मानव में ''वनमानुष और नियण्डरथल'' –मानव में से ही आधुनिक मनुष्य का काल क्रम आगे बढ़ा और यही सच भी हैं। श्री जगदीष भट्ट का मानना है कि आज के मानव का चौकस पूर्वज कौन रहा हो गा। मानवसम रूपी बानर और खासकर के चिम्पान्जी की प्रजाति में से इनका विकाष हुआ हैं। ४४ लाख (चौवालिस लाख वर्ष पूर्व) वर्ष पूर्व अफ्रिका के घनघोर जंगलों में रहती आदिम–मानव और आज के मनुष्य दोनों के बीच कोई न कोई कड़ी तो जरूर ही है।'' इन पर संषोधनात्मक जबाब श्री भट्ट ने दी है।[२६] हिन्दुस्तान में आदिम्–मानव सृष्टि की रचना के बाद सबसे पहले आदिम्–मानव भारत में रहता था। पूरी दुनिया में सबसे पहला आदिम्–मानव भारत में ही पाया गया है। आज से लगभग ५,००,००० (पाँच लाख) वर्ष पहले भारतवर्ष में आदिम्–मानव, मध्य–प्रदेष के मन्दसौर के इलाके में एक गुफा में रहता था। भारतीय पुरातत्वबेत्ता, डॉ॰ रमेष पंचौली ने 'मील गया आदिम्–मानव की गुफा, दुनिया का सबसे पहला मानव' के संबाददाता, एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। डॉ॰ प्रधुम्न भट्ट, जो इस सन्सनी खेज के संषोजक रहे है। आदिम्–मानव की गुफा की चौडाई ८ फुट है और गुफा की जमीन से ऊँचाई ५० फीट जीतनी है।[२७] चम्बल नदी पार करने के बाद यह गुफा ''चम्बल गाटी'' में स्थित है। ५ सालों में पुरा चम्बल गाटी की दषा पदल गयी किन्तु आदिम्–मानव की गुफा वेसे की वेसे रही। ऑस्ट्रेलिया के आर्टस ऐसोषियसन के वैज्ञानिको ने ''कार्बन डेटिंग पद्धति'' के जरिए इसको ५,००,००० (पाँच लाख) वर्ष पुराना और पूरी दुनिया का सर्व प्रथम पहला आदिम्–मानव भारत वर्ष के ह्रदय स्थल मध्य–प्रदेष के जिले मन्दसौर के चम्बल घाटी में आदिम्–मानव की गुफा पायी गयी है। इससे पहले वैज्ञानिकों ने फ्रान्स के 'स्वेत' नामक जगह पर आदिम्–मानव की पहली गुफा होने का दावा किया गया था। किन्तु अब यह मत पुरानी हो गयी है। फ्रान्स की आदिम्–मानव की गुफा आज से ३८,००० (अड़तिस हजार) वर्ष पुरानी है। जबकी भारत की आदिम्–मानव की गुफा ५,००,००० वर्ष पुरानी है। फ्रान्स की गुफा से भारत के आदिम्–मानव की गुफा १० गुना पुरानी है। पृथ्वी पर आदिम्–मानव की उत्पत्ति ७०,००,००० (सत्तर लाख) वर्ष पहले भारतवर्ष में हुई थी। १५ कि.मी. का रास्ता पुरा करने के बाद अर्थात् चम्बल नदी पार करने के बाद फिर जाकर आदिम्–मानव के निवास वाली गुफा मीलती है वहा पर पत्थरों के औजार भी पाये गये है। श्री हरकृष्ण, जो कि वहीं के स्थानीय निवासी है के मुताबीक यह गुफा आदिम्–मानव की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(१) Oriental Heritage, 'Story of Civilization' सभ्यता की कहानी By Dr. Bill Durcut, Page 88-89. (२) Encyclopaedia Indica, (हिन्दी विष्वकोष) Vol. 17, सम्पादक Dr. Nagendra Nath Basu Page. 396. (३) वही पष्ठ 399. (४) वही, पष्ठ 399 और आगे। (५) वही, पष्ठ 405 (६) हिन्दी विष्वकोष, भाग – 17, पष्ठ 403। (७) टी॰ बी॰ (E.L.) चैनल के 10 बजे रात वाले समाचार, 13 अक्टूबर, सन् 1997 ई॰ सन्। (८) Story of Civilization के Oriental Heritage के हिन्दी अनुवाद, ''सभ्यता की कहानी'' By डॉ॰ बिल डूरेन्ट कष्त, प्रथम संस्करण, पष्ठ 13, (६) Ancient History of India By F.R. कोरोकीन कष्त, पष्ठ 8. (१०) प्रागैतिहासिक काल में उत्तर – प्रदेष By डॉ॰ सांकालिया एच॰ डी॰ का गम्भीरता–पूर्वक लेख, 'धर्मयुग', 1972 ई॰ सन्, पष्ठ 25. (११) Pre-Historic and Proto-Historic of India and Pakistan, By Dr. H.D. Sankalia, Page 278. (१२) ''प्रागैतिहासिक मानव की कहानी, ''गंगा घाटी पर नया प्रकाष'' By डॉ॰ गोबर्ध्दन राम शर्मा 'दिनमान', 20 अगस्त, 1978, पृ॰ 25 एवं 27 और 'षैलाश्रित गुहाचित्र', पृ॰ 91. १३(अ).इलाहाबाद में हजारों साल पुराने नर–कंकाल By डॉ॰ विवेकीराय ''धर्मयुग'' 20 अक्टूबर 1978, पष्ठ 49, और शैलाश्रित गुहाचित्र, पष्ठ 91 से 92. १३(ब) Scholtz, A 1936 "Characters Common to Higher Primates and Characters Specific for man", Quarterly Review of Biology. Vol XI, PP-256-283, 425-455 (१४) सांस्कृतिक मानवषास्त्र By मैकविल जे॰ हर्शकोबित्स, 1955, Affred A. Kaapt, New York, हिन्दी अनु॰, रघुराज गुप्त, भारतीय भवन, लखनऊ, पष्ठ 17 और D.H. Morton (Marton Dudley.J.) 1927, "Human Origin : Correlation of Previous studies of Primate Feet and Posture with other Morphologic Evidence" एंव American Journal of Physical Anthropology, Vol X, PP – 173-203 अर्थात् डी॰ जे॰ मार्टन, 1927, पष्ठ 179, रेखाचित्र–3. (१५) सांस्कृतिक मानवषास्त्र : ''मानव जाति का उद्विकाष, पष्ठ 23. (१६) Mc Greger J.H. 1938, पष्ठ 7 अर्थात् "Human Origins and Early Man" in General Anthropology (E. Boas, ed.) New York. PP 24-94. एंव सास्कृतिक मानवषास्त्र, पष्ठ 77. (१७) Movius Hallam. L. Jr. 1942. The Ice Irish Stone Age, Cambridge. "1944" Early Man and Plastocene Stratigraphy in Southen and Eastern Asia "Peabody Museum of American Archeaology and Ethnology, Harvard University, Papers, Vol. XIX, No. 3, Page No. 8 और सां॰ मा॰, Page No. 29. (१८) Mc Greger, J.H. 1938 पष्ठ 68. "Human Origins and early Man" in General Anthropology (F. Boas Ed.) New York, 1938, PP 24-94 और सा॰ मा॰, पष्ठ 25. १६(अ) सा॰ मा॰, पष्ठ 25 और आगे। १६(ब) Story of Civilzation के Oriental Heritage के हिन्दी अनु॰ ''सभ्यता की कहानी'' पष्ठ 88–89 और आगे। २०. वहीं पष्ठ 91 और आगे। (२१) Weidenreich. F., 1945-46, "The Puzzle and Pithecan thropus". In Science and Scientists in the Netherlands Indis., New york. PP 380 – 390, अर्थात् Melville, J. Herskovits, 1955, Page - 76, २२(अ) सा॰ मा॰, पष्ठ 89. २२(ब) Ph.D. Thesis, Pre-History and Proto-History of Eastern India. 1940, Calcatta University, Calcutta.) और ''करनूल की संस्कृति का पाषाण युग'' By डॉ॰ ईसाफ एन॰ ने अच्छा काम किया है। २२(स) In the Archdeology, Ph.D. Thesis, Poona University, Poona (२३) विल डूरेन्ट, वहीं, पष्ठ 91 जव 97. (२४) वहीं, पष्ठ 24. (२५) वहीं, पष्ठ 200 और आगे । (२६) 'गुजरात समाचार' दिनाँक 08–11–2009, दिन इतवार, राजकोट से प्रकाषित, रीवर्षि में श्री जगदीष भट्ट का लेख ''मानव जाति के विकाष में आम के पेड़ की डाली'' पर जोरदार लेख पढ़िये। (२७) इन्दिया टी.वी. पर दिखाया गया एक स्पेषल रिपोर्ट ''हिन्दुस्तान